समस्त धर्मों का सार मानवता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत में अनेक धर्म और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। सभी अपने–अपने मतों और सम्प्रदायों के अनुसार धार्मिक क्रियाकलाप करके जीवनयापन करते हैं। कोई धर्म अच्छा या बुरा नहीं होता। धर्मों के मानने वाले लोगों में जब धार्मिक उन्माद को बढ़ाया जाता है तो वह बुरा हो जाता है। सभी धर्म अच्छे होते है। सभी धर्मों का सार है मानवता। मानवता का तात्पर्य है मनुष्य में अच्छे गुणों का होना। इस देश में धर्म और दर्शन की एक प्राचीन परम्परा रही है। यहां की संस्कृति धार्मिक संस्कृति है। यहां का कण–कण धर्म से अनुप्राणित है। वेद धार्मिक आस्था के आधार हैं। यहां का आचार–विचार धर्ममूलक है। यह संस्कृति हमें मानवता का संदेश देती है। धर्म वस्तुतः आस्था का विषय है। धर्म की भी अनेक परिभाषाएं की गई है। आत्म शुद्धि साधनं धर्म इस परिभाषा के अनुसार धर्म वह तत्व है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है। आत्मा मूल रूप से ज्ञानस्वरूप है। वस्तु का स्वभाव ही धर्म कहलाता है। जो इतर चीजें होती है वह अधर्म है। जैसे पानी का गुण है शीतलता, अग्नि का धर्म है उष्णता। जब उनके गुण को विकृत किया जाता है तो उनका स्वरूप बदल जाता है। जब वह अपने स्वरूप में रहता है तो वह तत्व धर्म तत्व कहलाता है। धर्म व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है। एक उदाहरण के द्वारा इसको समझा जा सकता है। धर्म को सम्प्रदाय की जंजीर से बांध दिया जाता है तो धर्म विकृत हो जाता है। भारत में अनेक धर्म हैं। जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईस्लाम, पारसी और हिन्दू धर्म। ये सब सम्प्रदाय हैं। सबकी अपनी–अपनी पूजा पद्धति और उपासना पद्धति है और उस पूजा पद्धति के अनुसार धर्म को संकीर्ण कर दिया जाता है। धर्म मानव को मानव से जोड़ता है। धार्मिक क्रियाकलाप के आधार पर मानव अपने आस्था को प्रकट करता है। सुख–दुःख, मोक्ष इत्यादि तत्वों को प्राप्त करता है। गीता जो कि हिन्दू धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, इसमें आत्मा की अजरता अमरता का बड़ा दार्शनिक विवेचन किया गया है। इसमें बताया गया है कि शरीर

नश्वर है और आत्मा अजर–अमर। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। शरीर पंचभूतात्मक है। आत्मा इससे परे है। शुद्ध आत्मा ज्ञान दर्शन और चारित्र से युक्त है। आत्मा अरूपी है किन्तु जब यह शरीर को धारण करती है तो यह रूपी कहलाने लगती है।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह भारतीय धर्म के मूल मंत्र हैं। अहिंसा परमो धर्मः अर्थात् अहिंसा ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है। किसी भी प्राणी का प्राणवियोजन न करना अहिंसा है। सत्य, मन, वचन और काया से समान व्यवहार करना सत्य है। अचौर्य किसी भी वस्तु को बिना दिये ग्रहण न करना अचौर्य है। ब्रह्मचर्य एक महत्वपूर्ण व्रत है। उपस्थेन्द्रिय विषयक संयम ब्रह्मचर्य कहलाता है। अपरिग्रह शोषण मुक्त समाज के लिए आवश्यक है। आधुनिक युग में लोग आवश्यकता से अधिक संग्रह कर रहे हैं। जिसके कारण अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। मनुष्य स्वार्थी होता चला जा रहा है।

किसी कवि ने लिखा है कि– 'बड़े भाग्य मानुष तन पावा' अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते है, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करता है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और

चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। योगत्रय के पवित्रीकरण में तत्वत्रय या रत्नत्रय की उपयोगिता और सार्थकता तभी सम्भव है जब जीवन से जुड़े हुए विविध व्यवहार और वस्तुओं के प्रति हम अपनी सम्यक् अवधारणा बनाये। मानवतावाद, दर्शन की एक ऐसी विचारधारा है जिसके अन्तर्गत मानव तथा उसकी समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। मानवतावाद में मनुष्य को ही केन्द्रिय स्थान मिला है। यह विचारधारा मनुष्य के हितों से संबन्धित है। मानवतावाद मुख्यतः इहलोक, बुद्धिवाद और व्यक्तिवाद के साथ मानव जीवन और उसकी अनुभूतियों को महत्व देता है। मनुष्यता ही विश्व में मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है।